Fourteenth Loksabha

Session : 4
Date : 23-03-2005

Participants : Chouhan Shri Shivraj Singh

Title: Situation arising out of the ban imposed on plucking Tendu Leaves from the forest areas of Madhya Pradesh.

श्री शिवराज सिंह चौहान (विदिशा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मध्य प्रदेश सहित अनेकों राज्यों के अभ्यारण्य क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी संकट में हैं। उनकी रोजी-रोटी छीनी जा रही है। उनके घर-बार उजाड़े जा रहे हैं। आदिवासी सीधे-सादे, सरल और भोलेभाले होते हैं, जिन्हें तथाकथित सभ्य समाज के लोगों ने संसाधन छीन कर, जंगलों की तरफ धकेल दिया है। वे वनों में रहते हैं। वनों की ही पूजा करते हैं और वन से ही अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं, लेकिन पिछले दिनों वनों की सुरक्षा और वन्य प्राणियों की सुरक्षा के नाम पर जो कानून बनाए गए हैं, उन कानूनों ने न तो वनों की सुरक्षा की है और न ही वे वन्य प्राणियों की रक्षा कर पाते हैं, बल्कि अपराधी खुलकर खेलते हैं। ये सारे कानून आदिवासियों के ऊपर कहर बनकर टूटते हैं।

महोदय, गर्मियों के दिनों में आदिवासी लोग तेंदू पत्ता तोड़कर अपनी रोजी-रोटी चलाते थे, लेकिन पिछले दिनों एक आदेश चला गया कि अभ्यारण्य क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी तेंदू पत्ता नहीं तोड़ सकते। आदिवासी लोग गर्मियों के दिनों में 20-25 दिन तेंदू पत्ता तोड़कर छः महीने के अपने रोजगार की व्यवस्था कर लेते थे, लेकिन अब वहां तेंदू पत्ते की तुड़ाई पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। इसके कारण उनके सामने रोजगार का गम्भीर संकट पैदा हो गया है।

महोदय, वहां सड़कें नहीं बनाई जा रही हैं, बिजली नहीं लगाई जा रही है। सैकड़ों वर्षों से आदिवासी वनों में रह रहे हैं। उन्हें तेंदू पत्ता नहीं तोड़ने दिया जा रहा है और इतना ही नहीं, वनों की सुरक्षा के कानूनों की आड़ में हमारे वनों के अधिकारी और कर्मचारी उन पर अमानुषिक अत्याचार करते हैं, उनके साथ मार-पीट की जाती है, उनकी माता-बहनों को बेइज्जत किया जाता है, उनके मुर्गा-मुर्गी छीने जाते हैं। इसलिए नक्सलवाद जैसे आन्दोलन जन्म लेते हैं और इसीलिए आदिवासी अपने हाथ में हथियार उठाने के लिए बाध्य होते हैं।

महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से भी विनम्र निवेदन करना चाहता हूं कि जितने भी हमने कानून बनाए हैं, वे मानवों के लिए बनाए हैं, मनुयों के लिए बनाए हैं। अगर ऐसे कानून उनकी रोजी-रोटी छीनने में आड़े आते हैं, तो वे बदल दिए जाने चाहिए। इस संबंध में सरकार तत्काल पहल करे, ताकि आदिवासी अपने परम्परागत तेंदू पत्ते की तुड़ाई कर के, अपना रोजगार चला सकें। वहां सड़कें बनाई जाएं, वहां बिजली लगाई जाए, ताकि वे क्षेत्र विकास की तरफ बढ़ सकें।

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY (PURI): I associate myself with what the hon. Member has stated.